संत ज़ेवियर सीनियर सेकेण्डरी विद्यालय, दिल्ली – 54

कक्षा–9 वार्षिक परीक्षा (एस.ए. 2) 2015–16
पूर्णांक–90

दिनाँक–4.3.2016 हिन्दी समय–3 घंटे

निर्देश– 1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2. खण्ड 'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'ङ' अलग–अलग कीजिए।

खण्ड 'क'

I. प्रस्तुत गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए – (1x5=5)

भारत के अनेक प्रधानमंत्री हुए, लेकिन जब हम उन्हीं में से एक ऐसे व्यक्ति की बात करते हैं, जिसमें सच्चे देशभक्त के सभी गुण विद्यमान थे, तो सीना गर्व से फूल जाता है। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं लालबहादुर शास्त्री जी की। शास्त्री जी का जन्म बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। बचपन अत्यंत ही निर्धनता एवं कष्ट में बीता। जिस समय वे भारत के प्रधानमंत्री बने, उस समय देश के सामने असंख्य समस्याएँ मुँह खोले खड़ी थीं लेकिन उन्होंने बड़े धैर्य के साथ सभी का सामना किया। उस समय अमेरिका से गेहूँ का आयात किया जाता था। अमेरिका इस बात के लिए मनमानी शर्तें रखता था, जो कि शास्त्री जी को पसंद नहीं थीं। उन्होंने देशवासियों को संदेश दिया कि ''पेट पर रस्सी बाँधो, साग–सब्ज़ी ज़्यादा खाओ, सप्ताह में एक दिन का उपवास रखो। बेइज़्ज़ती की रोटी से इज़्ज़त की मौत ज़्यादा अच्छी है।'' प्रधानमंत्री होते हुए भी उनके पास अपना कोई निजी घर नहीं था। उन्होंने देश के जवानों और किसानों के महत्त्व को पहचानते हुए 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया। वे एक अनुकरणीय नेता थे।

1. शास्त्री जी का बचपन किस प्रकार के परिवेश में बीता?

क. सुख एवं ऐश्वर्य के परिवेश में ख. निर्धनता एवं कष्ट में

ग. कृषक परिवार में घ. इनमें से कोई नहीं

2. जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने तब गेहूँ देश में कहाँ से आता था?

क. रूस से ख. जर्मनी से ग. अमेरिका से घ. ऑस्ट्रेलिया से

3. 'शास्त्री जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी कोई निजी घर तक नहीं था।' – इस बात से क्या संदेश मिलता है?

क. वे बहुत लालची थे और घर के लिए धन खर्च करना नहीं चाहते थे।

ख. वे अपने परिवार के प्रति ज़िम्मेदार नहीं थे।

ग. ईमानदारी के मार्ग पर चलने के कारण उनके पास इतना धन नहीं था।

घ. इनमें से कोई नहीं।

4. इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक होगा –

क. अनुकरणीय नेता ख. जय जवान, जय किसान ग. परिश्रम करना घ. देशभक्ति

5. 'अनुकरणीय' शब्द किस 'प्रत्यय' से बना है?

क. अनीय ख. ईय ग. णीय घ. य

II. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों के सही विकल्प छाँटकर लिखिए – (1x5=5)

चींटी है प्राणी सामाजिक
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन
छिपा नहीं उसका छोटापन
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती श्रम में तन्मय
वह जीवन की चिनगी–अक्षम।
वह भी क्या देही है, तिल सी?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल–सी!
दिनभर में वह मीलों चलती

अथक, कार्य से कभी न टलती!

1. निम्नलिखित में से चींटी का कौन सा गुण कवि ने नहीं बताया है?

   क. चींटी एक सामाजिक प्राणी है। ख. परिश्रमी है।

   ग. अच्छी नागरिक है। घ. दूसरों को बुरी तरह काटती है।

2. चींटी को कवि ने 'सामाजिक' क्यों कहा है?

   क. चींटी भी हमारे समाज का हिस्सा है। ख. चींटी दूसरे कीड़े–मकोड़ों के साथ रहती है।

   ग. चींटी हमेशा एक समाज बनाकर रहती है, अकेले कभी नहीं। घ. इनमें से कोई नहीं।

3. चींटी 'सुनागरिक' किस प्रकार है?

   क. वह देखने में सुंदर लगती है। ख. वह सुंदर नगर में रहना पसंद करती है।

   ग. वह अच्छे नागरिकों की तरह अपने काम में लगी रहती है, किसी दूसरे की ओर ध्यान नहीं देती।

   घ. इनमें से कोई नहीं।

4. चींटी के किस गुण को लोगों को अपनाना चाहिए?

   क. चींटी की तरह अन्न एकत्रित करना ख. चींटी की तरह अकेले काम करना।

   ग. अथक परिश्रम करना। घ. इनमें से कोई नहीं।

5. 'श्रमजीवी' शब्द का सही विलोम शब्द होगा –

   क. परिश्रमजीवी ख. अश्रमजीवी ग. परजीवी घ. जीवी

खण्ड 'ख'

III. निर्देशानुसार उचित विकल्प छाँटकर शब्दों में उत्तर दीजिए – (1x4=4)

1. 'प्रतिकूलता' शब्द में दिए उपसर्ग, मूल शब्द व प्रत्यय का सही विकल्प होगा –

   क. प्र + कूल + ता ख. प्रति + कूल + ता

   ग. प्रति + कूलता घ. प्र + ती + कूल + त + आ

2. 'सद्भाव' – शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग होगा –

क. सद् ख. स ग. सत् घ. स्

3. 'तम्' प्रत्यय का प्रयोग किस शब्द के साथ नहीं होगा –

क. उच्च ख. श्रेष्ठ ग. राष्ट[a] घ. लघु

4. 'निश्चितता' शब्द में दिए उपसर्ग, मूल शब्द व प्रत्यय का सही विकल्प होगा –

क. निस् + चिंता + ता ख. निश्चि + चिंत + ता

ग. निश्चित + ता घ. नि + श्चि + चिंत + ता

IV. समास संबंधी निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उचित विकल्प चुनकर शब्दों में लिखिए – (1x3=3)

1. '–––––––––' का पहला पद 'पूर्वपद' तथा दूसरा पद 'उत्तर पद' कहलाता है। – रिक्त स्थान का उचित विकल्प होगा –

क. समस्त पद ख. संज्ञा पद ग. समास चिह्न घ. विग्रह

2. 'वनमानुष' – शब्द का उचित विग्रह तथा समास भेद होगा –

क. वन में रहने वाला मानुष – तत्पुरूष समास ख. वन है जो मानुष – कर्मधारय समास

ग. वन के लिए हो जो मानुष – अव्ययी भाव समास घ. वन और मानुष – द्वंद्व समास

3. 'सौ अब्दों (वर्षों) का समाहार' –समास विग्रह का उचित मिलान कर शब्द बनाइए तथा भेद भी बताइए –

क. सतसई – द्वंद्व समास ख. षडानन – अव्ययीभाव समास

ग. शताब्दी – द्विगु समास घ. सौ शब्द – बहुव्रीहि समास

V. निर्देशानुसार अलंकार संबंधित प्रश्नों के सही उत्तर शब्दों में दीजिए – (1x4=4)

1. रूपक **अथवा** श्लेष अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।

2. ''आगे–आगे नाचती गाती बयार चली'' – काव्य पंक्ति में कौन सा अलंकार प्रयुक्त नहीं है?

क. पुनरूक्ति ख. मानवीकरण ग. अंत्यानुप्रास घ. उपमा

3. ''हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए'' – काव्य पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का भेद बताइए –

क. यमक ख. अतिशयोक्ति ग. उत्प्रेक्षा घ. अनुप्रास

4. इन उदाहरणों में से कौन–सा यमक अलंकार का उदाहरण नहीं है –

क. काली घटा का घमंड घटा　　ख. करका मनका डारि के, मनका मनका फेर

ग. मानो माई धन धन अंतर दामिनी　　घ. कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय

VI. निर्देशानुसार उत्तर चयन कर सही विकल्प शब्दों में लिखिए – (1x4=4)

1. वाक्य से क्या तात्पर्य है?

2. आज्ञार्थक वाक्य बताइए –

क. अब चला जाए।　　ख. उफ़! कितनी गर्मी है आज।

ग. क्या शीतल बीमार है?　　घ. अपना काम करो।

3. 'कल मेरे कुछ मित्र आएँगे' – दिए गए वाक्य के प्रकार का नाम छाँटकर लिखिए –

क. विधानवाचक　ख. संभावनार्थक　ग. इच्छार्थक　घ. संकेतवाचक

4. 'तुम्हारा बेटा बहुत सुंदर है' – वाक्य को विस्मयादिबोधक वाक्य में परिवर्तित कीजिए।

खण्ड 'ग'

VII. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित उत्तर के सही विकल्प चुनकर शब्दों में लिखिए– (1x5=5)

टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस ज़माने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास–सम्राट, युग–प्रवर्तक, जाने क्या–क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है।

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

क. फटे–जूते　ख. प्रेमचंद के फटे जूते　ग. मेरे बचपन के दिन　घ. फोटो का महत्त्व

2. इस पाठ के लेखक हैं –

क. हरिशंकर परसाई　ख. महादेवी वर्मा　ग. प्रेमचंद　घ. चपला देवी

3. प्रेमचंद के लिए कौन–सा विशेषण ठीक नहीं हैं?

क. उपन्यासकार ख. युग प्रवर्तक ग. महान कवि घ. कथाकार

4. जूता और टोपी किसके प्रतीक हैं?

क. दैनिक आवश्यकताओं के ख. सुख–दुख के

ग. अधिकार और सम्मान के घ. अमीरी व संतुष्टि के

5. 'आनुपातिक' में प्रत्यय का सही विकल्प है –

क. ईक ख. आ ग. इक घ. क

अथवा

गुरूदेव वहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़–भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गए तो गुरूदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान–स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कुराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता घीरे–घीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरूदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम–रोम से उस स्नेह–रस का अनुभव करने लगा। गुरूदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा ''देखा तुमने, यह आ गए। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।''

1. 'वहाँ' शब्द का प्रयोग किस स्थान के लिए किया गया है।

क. लेखक का घर ख. शांति निकेतन ग. श्री निकेतन घ. शिव निकेतन

2. 'अस्तगामी सूर्य' का क्या अर्थ है?

क. डूबता हुआ सरज ख. बादलों में छुपा हुआ सूरज

ग. जलता हुआ सूरज घ. निकलता हुआ सूरज

3. ''गुरूदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान–स्तिमित नयनों से देख रहे थे।'' इससे गुरूदेव की किस विशेषता का पता चलता है?

क. अकेले रहना पसंद ख. चुपचाप बैठना ग. जिज्ञासु घ. प्राकृतिक सौंदर्य प्रेमी

4. ''देखा तुमने यह आ गए'' इस पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए आया है?

क. दर्शनार्थी के लिए　　ख. कुत्ते के लिए　　ग. लेखक के लिए　　घ. बच्चों के लिए

5. 'परितृप्ति' शब्द का उपसर्ग है –

क. परी　　ख. परि　　ग. पर　　घ. परित

VIII. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में दीजिए – (2x5=10)

1. मैना ने अपने महल को बचाने के लिए कौन से तर्क दिए? (दो तर्क दीजिए।) अंग्रेज़ इस महल को नष्ट क्यों करना चाहते थे?

2. 'आज वह सपना खो गया है।' – महादेवी किस सपने के खोने की बात कर रही है, वह क्यों खो गया है?

3. ''एक कुत्ता और एक मैना' – पाठ में लेखक ने लंगड़ी मैना व कौए से संबंधित किन घटनाओं का वर्णन किया है? संक्षेप में लिखें।

4. प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कोई दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखें।

5. जिस सामाजिक परिवेश में महादेवी का जन्म हुआ था, उस समय लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार होता था? महादेवी का जीवन उनसे किस प्रकार भिन्न था?

IX. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

पर आज जिधर भी पैर करके सोओ
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं
माँ अब नहीं है
और यमराज की दिशा भी वह नहीं रही
जो माँ जानती थी।

1. कवि तथा कविता का नाम लिखिए। (1)

2. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है? (2)

3. काव्य सौंदर्य की चार विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए। (2)

अथवा

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,

'बरस बाद सुधि लीन्हीं' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,

हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।

मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के। (1x5=5)

1. कवि तथा कविता का नाम बताइए।
2. बूढ़े पीपल ने मेघों का स्वागत किस प्रकार किया?
3. लता और ताल किसके प्रतीक हैं?
4. पद्यांश में दिए गए दो अलंकारों का उदाहरण सहित नाम बताइए।
5. काव्य सौंदर्य की किन्हीं दो शैलीगत विशेषताओं का वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

X. काव्य–खण्ड पर आधारित निम्न प्रश्नों के उत्तर 60–70 शब्दों में दीजिए – (2x5=10)

1. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?
2. 'यमराज की दिशा' कविता हमें क्या सीख देती है?
3. मेघ रूपी मेहमान के आने से प्रकृति में क्या–क्या परिवर्तन हुए?
4. 'चंद्र गहना .....' कविता ने कवि ने बगुले और चतुर चिड़िया के किन कार्यों का वर्णन किया? ये दोनों किन–किन के प्रतीक हैं?
5. 'चंद्र गहना .....' कविता में चंद्र गहना से लौटते समय खेत–खलिहानों में किसके विवाह के आयोजन की कल्पना कवि ने की है? उसे अपने शब्दों में लिखिए।

XI. 'कृतिका' पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्नों में से किसी **एक** का उत्तर दीजिए – (5)

माटी वाली की दिनचर्या क्या थी? वह किन समस्याओं का सामना करती है, किन्हीं 3 का वर्णन कीजिए? विरासत के बारे में मालकिन के क्या विचार थे? माटी वाली पाठ से आपने क्या प्रेरणा हासिल की?

अथवा

''किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया'' – निबंध में लेखक घर छोड़कर दिल्ली चले आए। क्या उनका यह कदम उचित था? 'हाँ' तो क्यों? 'नहीं' तो क्यों? दिल्ली आकर उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? किन्हीं तीन का वर्णन करें। बच्चन का लेखक पर सबसे ज़्यादा प्रभाव पड़ा। आपने बच्चन जी के व्यवहार से क्या सीखा? (कोई दो सीखें लिखें।)

खण्ड 'घ'

XII. नीचे दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए (10)

व्यायाम के लाभ

– व्यायाम का महत्त्व

– व्यायाम से मन एवं शरीर पर नियंत्रण

– व्यायाम के प्रकार

– व्यायाम तथा योग

– व्यायाम के लाभ

अथवा

विद्यार्थियों में घटते मानवीय मूल्य

– मानवीय मूल्य का अर्थ

– आवश्यकता

– घटने का कारण

– मानवीय मूल्यों की कमी से समाज को हानियाँ

– निष्कर्ष

अथवा

आधुनिक भारत की समस्याएँ

– मानव जीवन और समस्याएँ

– भारत में अनेक समस्याएँ – गरीबी, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता

– कारण

– निराकरण में युवकों की भूमिका

– निष्कर्ष

XIII. दिए गए पत्रों में से किसी '**एक**' पर पत्र लिखिए। (5)

आप 'बुक फेयर (पुस्तक मेला) देखने गए। वहाँ आपने क्या–क्या किया, इसका वर्णन करते हुए अपने पिता जी को एक पत्र लिखिए।

अथवा

आपके इलाके से रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए बस–सेवा अच्छी नहीं है। बस–सेवा को अच्छा बनाए जाने के लिए परिवहन निगम के निदेशक को एक पत्र लिखिए।

XIV. किसी **एक** विषय पर प्रतिवेदन लिखिए। (5)

आपको ट^{a}न से यात्रा करनी थी। आप स्टेशन पहुँचे। आपके पास सामान अधिक था। कुली लोग मनमाने दाम माँग रहे थे। प्लेटफॉर्म पर चारों ओर गंदगी का माहौल था। आम आदमी की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए एक आम नागरिक की तरफ से एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

अथवा

आपके विद्यालय में तीन दिन तक अंतर्विद्यालय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम

के प्रथम विजेता दल के अध्यक्ष की ओर से विद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित किए जाने हेतु एक

प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

खण्ड 'ङ'

मुक्त पाठ्य सामग्री

विषय : महिला सशक्तिकरण

अधिगम उद्देश्य

कक्षा नवीं में 'महिला सशक्तिकरण' के अंतर्गत इस मुक्त पाठ सामग्री में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में आए सुधार और सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए उठाए गए कदमों पर तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत की गई है। शिक्षार्थी कक्षा में और अपने परिवार में इस विषय पर चर्चा करेंगे और ऐसी सोच-समझ के वाहक बनेंगे जो समाज में एक ऐसा स्वस्थ वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध हो जहाँ नारी सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त हो।

आज की नारी में छटपटाहट है आगे बढ़ने की, जीवन और समाज के हर क्षेत्र में कुछ करिश्मा कर दिखाने की, अपने अविराम अथक परिश्रम से नया सवेरा लाने की तथा ऐसी सशक्त इबारत लिखने की जिसमें महिला अबला न रहकर सबला बन जाए। अब यह अवधारणा मूर्त रूप ले रही है। आज स्थिति यह है कि कानून और संविधान में प्रदत्त अधिकारों का संबल लेकर नारी अधिकारिता के लम्बे सफर में कई मील-पत्थर पार कर चुकी है। लेकिन फिर भी उसके लिए अभी कई और मंजिलों को छूना बाकी है।

हम यहाँ इस विषय को आपके अध्ययन हेतु क्यों प्रस्तुत कर रहे हैं? या फिर महिला सशक्तिकरण क्यों जरूरी है? इन प्रश्नों पर आप अपने विद्यालय, परिवार में चर्चा करें। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जानें, समझें और समाज में जागरूकता लाने के लिए सतत प्रयासरत रहें।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'
(अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।)

नारी के बिना किसी समाज की रचना संभव नहीं हैं। समाज में नारी एक उत्पादक की भूमिका निभाती हैं। नारी के बिना एक नये जीव की कल्पना नहीं की जा सकती।

महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्ष की अहम भूमिका है। शिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करके विकास और उन्नति के म खोलती है। यह महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है क्योंकि महिला श शिक्षित होने पर उनमें जागरूकता, चेतना आएगी, अधिकारों की सजगता होगी, रूढ़ियां, कुरीतिय कुप्रथाओं का अन्धेरा छंटेगा और वैचारिक क्रान्ति से प्रकाश पुंज फूट निकलेगा। शिक्षा के माध्यम महिलाएं समाज में सशक्त, समान एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका दर्ज करा सकती हैं। शिक्षित महिलाएं न केव स्वयं आत्मनिर्भर एवं लाभान्वित होती हैं अपितु भावी पीढ़ियां भी लाभान्वित होतीं हैं।

भारत में महिला एवं पुरुष की शिक्षा में विभेदीकरण पाया जाता है। वैश्विक परिदृश्य पर एक नजर डा तो यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार महिला साक्षरता की स्थिति विश्व के कुछ देशों में इस प्रकार है

क्र० सं०	देश	साक्षरता (प्रतिशत)
1.	रूस	99.8
2.	चीन	98.5
3.	ब्राजील	97.9
4.	नाईजीरिया	86.5
5.	भारत (2011)	65.46

भारत में साक्षरता (महिला)

क्र० सं०	वर्ष	साक्षरता (प्रतिशत)
1.	1951	8.9
2.	1961	15.4
3.	1971	22.0
4.	1981	29.8
5.	1991	39.3
6.	2001	53.7
7.	2011	65.46

भारत में लिंगानुपात

भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिंगानुपात को देखा जाए तो सदैव 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या उससे कम ही रही है। वर्ष 1951 से लिंगानुपात पर दृष्टि डालें तो इसमें उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, परन्तु कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिए जिसे निम्न तालिका में देखा जा सकता है-

क्र० सं०	वर्ष	लिंगानुपात
1.	1951	946
2.	1961	941
3.	1971	930
4.	1981	934
5.	1991	927
6.	2001	933
7.	2011	940

यदि हम भारत में लिंग आधारित सामाजिक भेदभाव के बारे में विचार करते हैं तो यह घर से ही प्रारंभ हो जाते हैं। लड़के-लड़कियों के जन्म, खान-पान, पालन-पोषण, उठने-बैठने, बाहर आने जाने, कार्यप्रणाली, स्वास्थ्य आदि के बारे में किया जाने वाला भेदभाव उनके भावी जीवन के प्रमुख अवसरों पर प्रतिकूल असर डालता है। यह स्त्री-पुरूष के बीच गहरी असमानता को जन्म देता है, महिलाओं को हीन भावना और कुंठाओं से ग्रस्त करता है। इस तरह की लैंगिक असमानता हमारे परिवार, समुदाय, समाज और देश की प्रगति के लिए ठीक नहीं है। एक नागरिक होने के नाते हम सबको एक सकारात्मक सोच के साथ मिल-जुल कर लैंगिक असमानता की सामाजिक तस्वीर को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री–पुरुष की समानता की दुहाई देने वाले हमारे समाज में बीमार होने पर महिलाओं को गम्भीर स्थिति में ही अस्पताल ले जाया जाता है। आज भी देश में प्रसवपूर्व सेवाएं शोचनीय दशा में हैं। केवल 53.8 प्रतिशत को टिटनेस टॉक्साइड के टीके मिल पाते हैं, 40 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं का रक्त चाप लिया जाता है। अभी भी 2/3 प्रसव घर पर ही हो रहे हैं। केवल 43 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की सेवाएं प्राप्त हैं। शिशु जन्म के उपरान्त भी महिलाओं को बहुत कम और कन्या शिशु के मामले में कोई देखभाल उपलब्ध नहीं होती। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एक लाख पच्चीस हजार महिलाएं गर्भधारण के पश्चात् मौत का शिकार हो जाती हैं। प्रत्येक वर्ष एक करोड़ बीस लाख लड़कियां जन्म लेती हैं लेकिन तीस प्रतिशत लड़कियां 15 वर्ष से पूर्व ही मृत्यु का शिकार हो जाती हैं। गर्भवती महिलाओं पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 72 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं निरक्षर हैं। ऐसी स्थिति में वे गर्भधारण करने की उम्र, पौष्टिकता, भारी काम, काम के घण्टों, स्वास्थ्य जांच आदि से वंचित रहती हैं और सब कुछ भगवान पर छोड़ देती हैं। अब महिलाओं को समझना होगा कि आज समाज में उनकी दयनीय स्थिति भगवान की देन न होकर समाज में चली आ रही परम्पराओं का परिणाम है। इस स्थिति को बदलने का बीड़ा महिलाओं को स्वयं उठाना होगा। जब तक वह स्वयं अपने सामाजिक स्तर पर आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं करेगी, तब तक समाज में उनका स्थान गौण ही रहेगा।

इतिहास में कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्रियों ने अपनी प्रतिभा, वीरता और साहस का परिचय दिया हैं। बिजली की कौंध सी दमक दिखाती हुई भारत वर्ष के आकाश पटल पर अवतरित हुई मुगल काल में रजिया सुलतान, नूरजहाँ और जोधाबाई ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शासन किया, जीजाबाई ने वीर शिवाजी को वीरता का पाठ पढाया, रानी पद्मिनी और मीरा बाई ने अलग ही तरह की वीरता दिखाई, 1857 के अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम में रानी लक्ष्मी बाई, और फिर उसके बाद सुभाष चंद्र बोस की सेना की कप्तान लक्ष्मी सहगल, दुर्गा भाभी का योगदान हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई में कौन भूल सकता है? और भी न जाने कितनी ही जुझारू स्त्रियाँ हैं जिनका नाम नहीं जाना गया पर किसी न किसी स्तर पर इनका योगदान अतुलनीय था। इस समय में राजा राम मोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती का उपकार माने बिना नहीं रह सकते जिन्होंने स्त्री को पुरुष के समकक्ष बनाने की पहल की, राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के विरूद्ध कानून बनवाया और दयानंद जी ने स्त्री शिक्षा और पर्दा प्रथा को समाप्त करवाने की पहल की। इन दोनों को महिला सशक्तिकरण का प्रणेता, पथ प्रदर्शक और युग प्रवर्तक कहा जाए तो अतिशियोक्ति न होगी!

Contd.....8

नारी सशक्तिकरण का मतलब बड़े रोजगार ही नहीं हैं, न ही इसका क्षेत्र महानगरों या शहरों तक सीमित रखा जा सकता है। महात्मा गांधी कहते थे कि गांवों में किसान खुशहाल होंगे तो देश अपने आप खुशहाल हो जाएगा। यह बात नारी सशक्तिकरण पर भी लागू होती है। ग्रामीण महिलाएं सदियों से घर-खेत में पुरुषों के बराबर ही काम करती आयी हैं, लेकिन वहां उन्हें सामंती सोच के कारण दूसरे दर्जे का नागरिक ही माना जाता रहा है। ग्रामीण समाज की सोच बदलने का वक्त अब आ गया है। आज भी हमारी जनसंख्या की बहुसंख्या गांवों में ही है। इसलिए महिलाओं की बेहतरी के लिए गांवों में पहल की जानी चाहिए। ग्राम पंचायतों और स्थानीय निकायों के चुनावों में महिलाओं की बढ़ती संख्या से हालात में बदलाव आना शुरू ज़रूर हो चुका है, मगर इसमें और तेज़ी लाने की ज़रूरत है। करीब आठ दशक पहले सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने एक कविता लिखी थी- 'वह तोड़ती पत्थर।' महिलाएं आज भी करीब-करीब इसी भूमिका में हैं। खासकर गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में। उन्हें अपने श्रम का समान मूल्य नहीं मिलता। घर संभालने और बच्चों को पालने को तो उनका नैसर्गिक दायित्व ही माना जाता है। ऐसा है भी, मगर इसमें लगने वाले उनके समय और श्रम का शायद ही कभी कोई आकलन किया गया हो। हालांकि यह भी एक 'उत्पादक' कार्य है और किसी भी समाज या देश की प्रगति तथा खुशहाली में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

आज महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर रूढ़ीवादी प्रवृत्तियों को पार कर विभिन्न व्यवसायों एवं सेवाओं में कार्यरत हैं, जिनसे आर्थिक आत्मनिर्भरता भी आ रही है। वे केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ ही नहीं हुई, अपितु समाज एवं परिवार की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने प्रारम्भ हो गए हैं। महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं के बल पर आगे बढ़ रही हैं और ये संकेत मिलना शुरू हो गया है कि चाहे सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा हो, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा या अन्य शिक्षा हो, सभी जगह महिलाओं ने अपना परचम फहराया है। चाहे संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा हो या राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा या अन्य प्रतियोगी परीक्षाएं हों महिलाएं कहीं भी पीछे नहीं हैं। बैंकिंग, आईटी, मेडिकल, शिक्षा, इंजिनियरिंग, बिजनेस और उद्यमिता हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। देश भर में 10 वीं और 12 वीं की परीक्षाओं में हर साल लड़कियां ही लड़कों से बाजी मारती रही हैं। खेलों, फिल्मों, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं, पत्रकारिता, लेखन आदि में भी महिलाओं ने अपने आपको स्थापित किया है। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर, जज, प्रशासनिक अधिकारी जैसे पदों पर महिलाएं आ रही हैं। राजनीति में तो वार्ड पंच, सरपंच, प्रधान, प्रमुख, विधानसभा सदस्य, लोकसभा सदस्य, राज्य सभा सदस्य, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे पदों पर अपना दमखम दिखाने में पीछे नहीं हैं।

आज के युग में महाकवि निराला, जिन्होंने लिखा 'तोड़ो तोड़ो कारा तोड़ो' और कैफ़ी आज़मी जिन्होंने कहा तुमको मेरे साथ ही चलना होगा– आदि लिख कर महिलाओं का आह्वाहन किया कि वो मुख्य धारा में आए, अपने बंधनों से मुक्त हों और पुरुषों के साथ कंधों से कन्धा मिला कर चलें! महिलाओं को भी ये समझना चाहिए की अधिकार मांगने से नहीं मिलते, अपितु उनके लिए संघर्ष करना ही पड़ता है, कोई भी आपको थाली में सजा कर उपहार स्वरुप आपके अधिकार नहीं देता।

देश के संविधान में महिलाओं को सदियों पुरानी दासता एवं गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने के प्रावधान किए गए हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 19, 21, 23, 24, 37, 39(बी), 44 तथा अनुच्छेद 325 स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकारों की पुष्टि करते हैं।

वर्तमान समय में लोग बेटियों को बोझ नहीं समझें और दुनिया में आने से पहले मारे नहीं इसलिए सरकार ने बहुत सारी योजनाओं की शुरुआत की है–

लाडली योजना

लाडली योजना को दिल्ली सरकार द्वारा सन 2008 में लागू किया गया। जनवरी 2008 और उसके बाद पैदा हुई लड़कियों को जन्म से ही इस योजना का लाभ मिल रहा है। लाडली योजना के अंतर्गत दिल्ली

के किसी भी अस्पताल / नर्सिंग होम अथवा संस्था में जन्म लेने वाली बालिका को 11,000 रुपये दिए जाते हैं और यदि बालिका का जन्म इसके अलावा कहीं और हुआ हो तो उसे 10,000 रुपये दिए जाने का प्रावधान है। यह धनराशि बालिका के खाते में जमा करवाई जाती है। इसके अलावा कक्षा एक, छह और नौ में दाखिले के समय भी बालिका के खाते में प्रत्येक बार पांच हजार रुपये जमा करवाए जाते हैं। कक्षा 10 पास करने पर तथा 12वीं में दाखिला लेने पर भी 5-5 हजार रुपये इनके खाते में जमा करवाए जाने का नियम लाडली योजना में है। 18 वर्ष की उम्र पूरी करने पर और कक्षा 10 उत्तीर्ण करने के बाद ही बालिका इस पूरी रक़म को ब्याज सहित अपने खाते से निकाल सकती है।

किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना (आर.जी.एस.ई.ए.जी) - सबला

11-18 वर्ष के आयु वर्ग में किशोरियों के पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधाार लाने और जीवन कौशल, स्वास्थ्य और पोषण में शिक्षा प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना सबला नवम्बर, 2010 में शुरु की।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना'

वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने देश में लड़कियों के साथ भेदभाव रोकने के लिए एक नए अभियान की शुरुआत की है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नाम के इस अभियान का जोर खासतौर से कन्या भ्रूणहत्या को रोकने पर है। बालिकाओं के अस्तित्व को बचाने, उनके संरक्षण और सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए समन्वित और सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है जिसके लिए सरकार ने "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" पहल की घोषणा की है। इसे एक राष्ट्रीय अभियान के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा और सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से उन 100 जिलों का चयन किया जाएगा जहाँ बाल लिंग अनुपात सबसे कम है और फिर वहां विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित कर कार्य किया जाएगा। यह महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम।

2. बालिकाओं के अस्तित्व को बचाना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना।

3. बालिकाओं की शिक्षा और भागीदारी सुनिश्चित करना।

उड़ान परियोजना – एक कार्यक्रम जो छात्राओं को पंख दे

UDAAN

A program to give wings to girl students

स्कूल स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षण को समृद्ध करने हेतु एवं स्कूल शिक्षा और इंजीनियरिंग प्रवेश द्वार के बीच शिक्षण की खाई को पाटने के लिए, सी.बी.एस.ई ने एक परियोजना शुरू की है जिसमें देश में प्रमुख इंजीनियरिंग कॉलेजों की प्रवेश परीक्षा हेतु कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं की छात्राओं को नि:शुल्क ऑनलाइन संसाधन प्रदान कराये जा रहे हैं।

उड़ान परियोजना का उद्देश्य है प्रतिष्ठित संस्थानों में छात्राओं के कम नामांकन अनुपात को संबोधित करना एवं इन संस्थानों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित करना। इसके अलावा इस परियोजना का उद्देश्य है कि स्कूलों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊंची उड़ान भरने की इच्छुक छात्राओं को सक्षम किया जाए ताकि वे भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिका में आ सकें।

महिला सशक्तिकरण किसी कानून के तहत नहीं हो सकता। हाँ, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार कम हो सकते हैं पर उनका सशक्तिकरण करने के लिए हमें भारत की बुनियादों में जा कर ही हल ढूँढना होगा। भारत की बुनियाद भारत के गाँव हैं। गाँवों में सरकार को ऐसे कार्यक्रम चलाने होंगे जो घर-घर में महिलाओं को उनके हक के बारे में बताए और उनके प्रति संवेदनशील बनाएँ। जब वह अपने स्वत्वाधिकार के बारे में जानने लगेंगी तो उनकी पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक मुख्य धारा में क्रियाशील सहभागिता होने लगेगी और स्थिरतापूर्वक वो सशक्त होती रहेंगी। जिस तरह सरकार के प्रयासों से हमने पोलियो को अपने देश से निकाल फेंका है, ठीक उसी तरह महिलाओं पर चढ़े इस नक़ाब को भी देश-निकाला दिया जा सकता है। ज़रूरत है एक देशव्यापी प्रयास की, सही मायनों में इस दिशा में कदम बढ़ाने की, इन सभी आंदोलनों में स्वयं महिलाओं को खुद अग्रिम पंक्ति में खड़ा होना होगा क्योंकि उनके हक की लड़ाई उन्हें खुद लड़नी है।

XV. उपर्युक्त पाठ्य सामग्री के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. महिला सशक्तिकरण से क्या अभिप्राय है? इसमें शिक्षा का क्या योगदान है? स्पष्ट कीजिए। (2)

2. बालक बालिकाओं का असमान लिंग अनुपात विषय को ध्यान में रखते हुए किसी अखबार के लिए जागरूकता विज्ञापन के लिए नारा लिखें व उचित चित्र बनाएँ। (2)

XVI. निम्नलिखित प्रश्नों के 60–70 शब्दों में उत्तर दीजिए –

1. महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा उठाए गए किन्हीं दो प्रयासों का वर्णन कीजिए।(3)

3. एक संवेदनशील नागरिक होने के नाते आप 'नारी सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त हो' इस के लिए क्या बदलाव ला सकते हैं? (कोई तीन सुझाव दीजिए) (3)

*****